

पक्षियों का कवि सम्मेलन

बाबूराम पालीवाल

चित्रांकन : अरुप गुप्ता

नेहरू बाल पुस्तकालय

पक्षियों का कवि सम्मेलन

बाबूराम पालीवाल



चित्रांकन
अरुप गुप्ता



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

सूची



ISBN 978-81-237-5814-5

पहला संस्करण : 2010 *(शक 1932)*

Pakshiyo Ka Kavi Sammelan *(Hindi)*

रु. 30.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित



पक्षियों का कवि सम्मेलन

इस पक्षियों के कवि सम्मेलन में भाग लेने के लिए अमराई से श्रीमती कोकिल कुमारी, तलैया से श्रीयुत् बगुला भगत, घूरेपूर से श्रीयुत् कुकुट चंद्र, उद्यान निकेतन से श्रीमती बुलबुल बनर्जी, कदंब कानन से श्रीयुत् पपीहा लाल, पिंजरापुर से कुमारी मैना, और दक्षिण भारत से श्रीयुत् कागराज यहां पधारे हैं। श्रीयुत् कपोत चंद्र और श्रीमती कपोती रानी ने पत्र भेजा है कि वे इस कवि सम्मेलन में भाग नहीं ले सकेंगे; कवि सम्मेलन की सफलता के लिए उन्होंने शुभकामनाएं भेजी हैं।

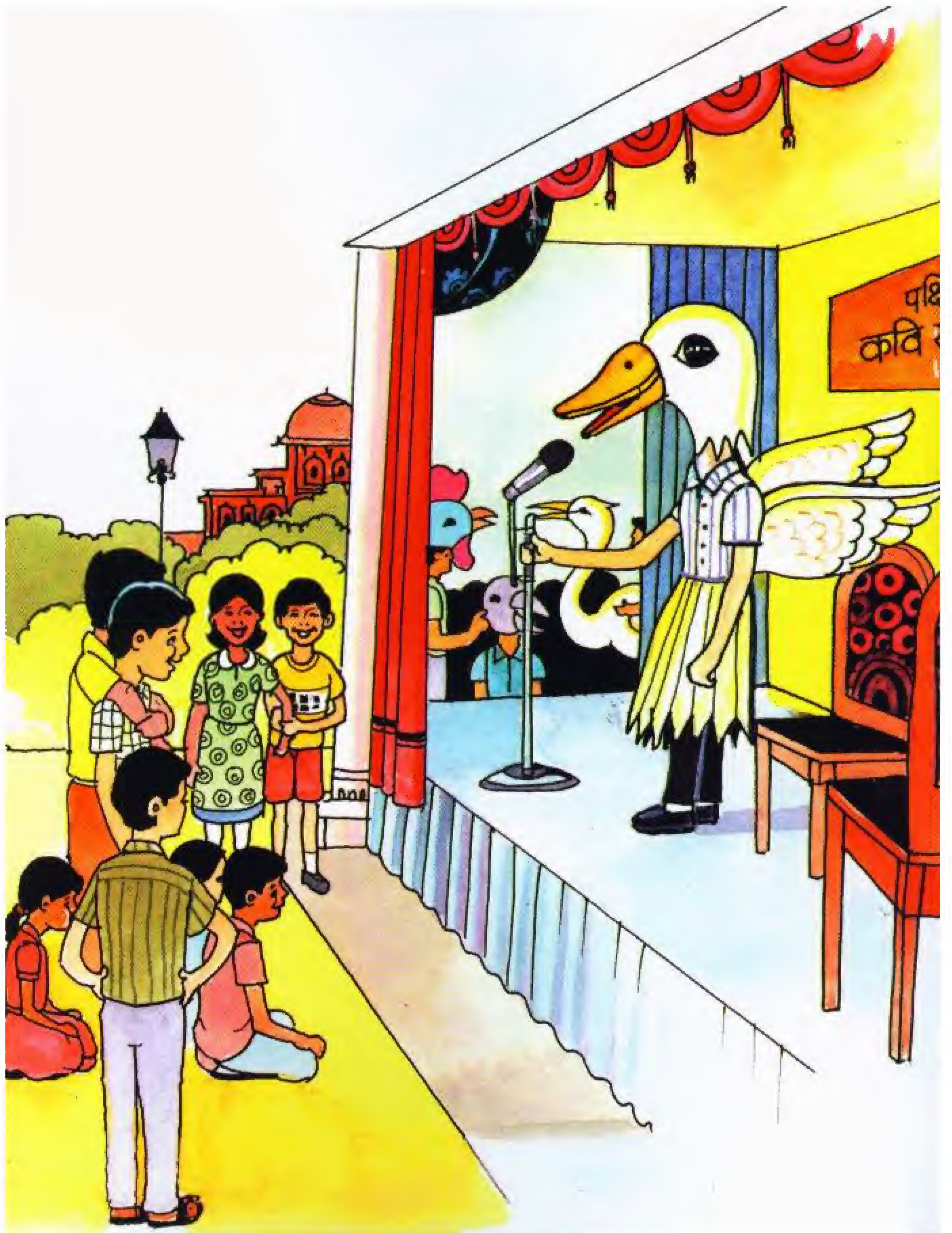
आज के कवि सम्मेलन के सभापति का आसन पक्षियों के राजा मानसरोवर निवासी श्रीयुत् हंसराज जी ग्रहण करेंगे। श्री हंसराज जी से प्रार्थना है कि वे सभापति के आसन पर विराजमान हों। आपसे निवेदन है कि आप शांतिपूर्वक कवियों एवं कवयित्रियों की रचनाएं सुनें।

हंसराज–बहनो तथा भाइयो! आप लोगो ने मुझे जो यह सम्मान दिया है, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। कवि सम्मेलन के लिए पहले ही देर हो चुकी है। इसलिए मैं अधिक कुछ न कहकर कविवर श्रीयुत् कुकुट चंद्र जी से निवेदन करता हूं कि वे अपनी कविता से कवि सम्मेलन की कार्यवाही आरंभ करें। घूरेपुरवासी श्रीयुत् कुकुट चंद्र जी!

कुकुट–मेरी कविता है–कुकड़ूं कूं!

कुकड़ूं कूं भई! कुकड़ूं कूं
हुई भोर, मैं कहता हूं
कुकड़ूं कूं भई! कुकड़ूं कूं!

मुन्नी जागो, मुन्ना जागो
खुली हवा में, थोड़ा भागो
करके कुछ व्यायाम दूध का पियो कटोरा गट-गट गूं!
कुकड़ूं कूं भई! कुकड़ूं कूं!


कवि

कपड़े पहन मदरसे जाओ,
पंडितजी को पाठ सुनाओ,
पाठ नया पढ़कर दिन में, संध्या को घर पर आना यूं!
कुकड़ूं कूं भई! कुकड़ूं कूं!

बगिया में ज्यों फूल दुलारा
आसमान में चंदा तारा
हंस-हंसकर हम सबसे कहना, कहो हंसी से घर भर दूं!
कुकड़ूं कूं भई! कुकड़ूं कूं!

(तालियां बजना, हंसी की आवाज़! वाह! भई वाह!! खूब कहा! कुकड़ूं कूं!)

हंसराज—श्रीयुत् कुकुटचंद्र की कुकड़ूं कूं के बाद पिंजरापुरवाली कुमारी मैना की कविता सुनिए। सुश्री कुमारी मैना!

मैना—मैं बोल रही हूं मैना!

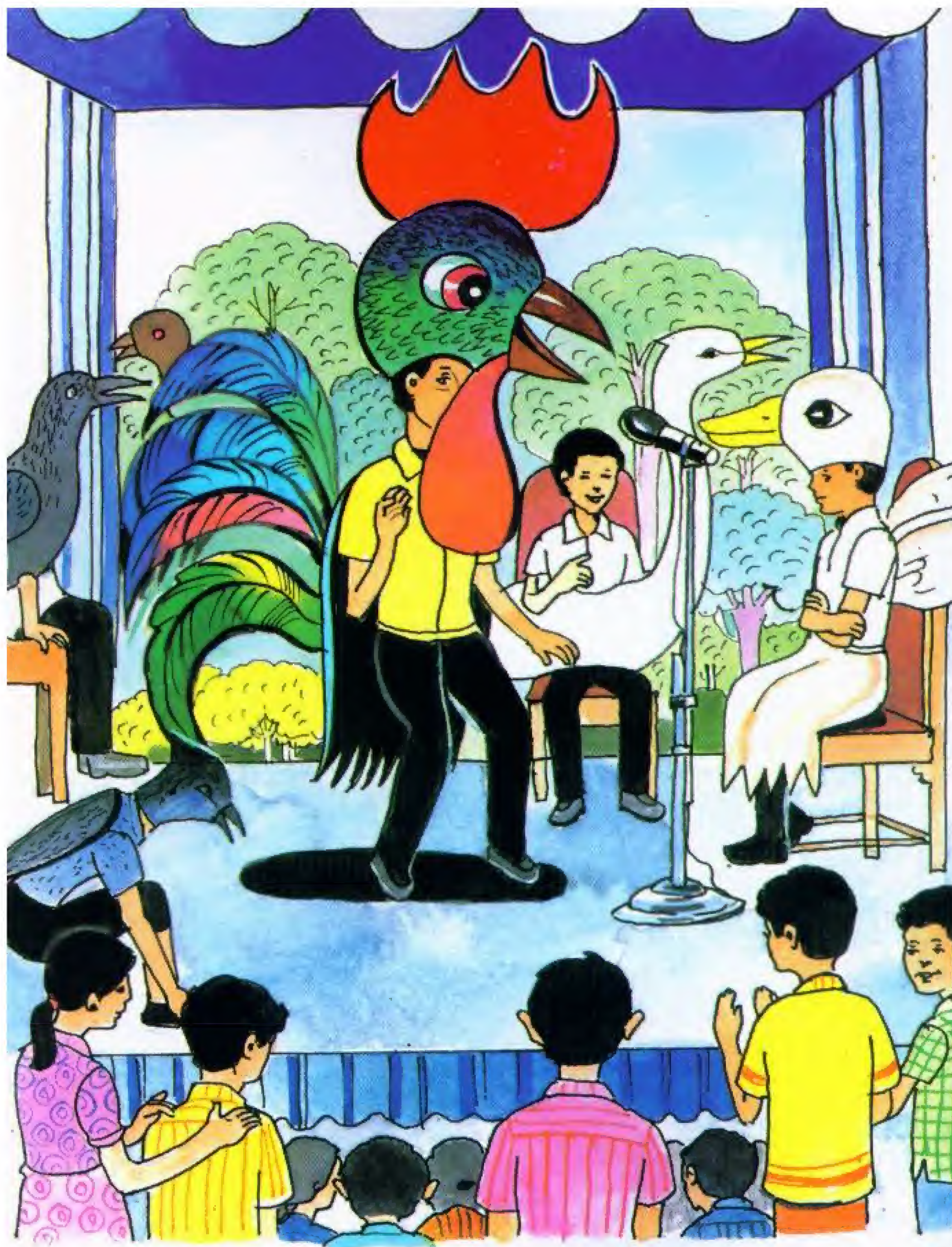
मैं बोल रही हूं मैना, मेरी बातें सुन लेना
जो कहो वही मैं बोलूं, बातों में मिश्री घोलूं
मैं हूं कोकिल की बहिना, मैं बोल रही हूं मैना!
मैं राम नाम भी लेती, मैं गाली भी दे देती
तुम सुन लो अपना कहना, मैं बोल रही हूं मैना!
पिंजरे में बंद हमारे जीवन का सुख-दुःख सारा
क्या हमको लेना-देना, मैं बोल रही हूं मैना!

(तालियों की आवाज़—वाह! वाह!!)

हंसराज—अब आपके सामने उद्यान निकेतन से पधारने वाली श्रीमती बुलबुल बनर्जी अपनी कविता सुनाएंगी। श्रीमती बुलबुल बनर्जी!

बुलबुल—बुलबुल की यही कहानी! बुलबुल की यही कहानी!

वह चहक-चहककर गाती, वह फुदक-फुदक उड़ जाती
वह पेड़ों पर चढ़ जाती, वह फुनगी पर बढ़ जाती
वह करती है मनमानी, बुलबुल की यही कहानी!
वह दूर-दूर तक जाती, वह पास-पास तक आती



जब मन में आता गाती, तब चहल-पहल भर जाती
वह है बागों की रानी, बुलबुल की यही कहानी!

(तालियों की आवाज़! बहुत सुंदर कविता है!)

हंसराज—अब श्रीयुत् पपीहालाल अपनी कविता का पाठ करेंगे।

कदंब कानन निवासी श्री पपीहालाल!

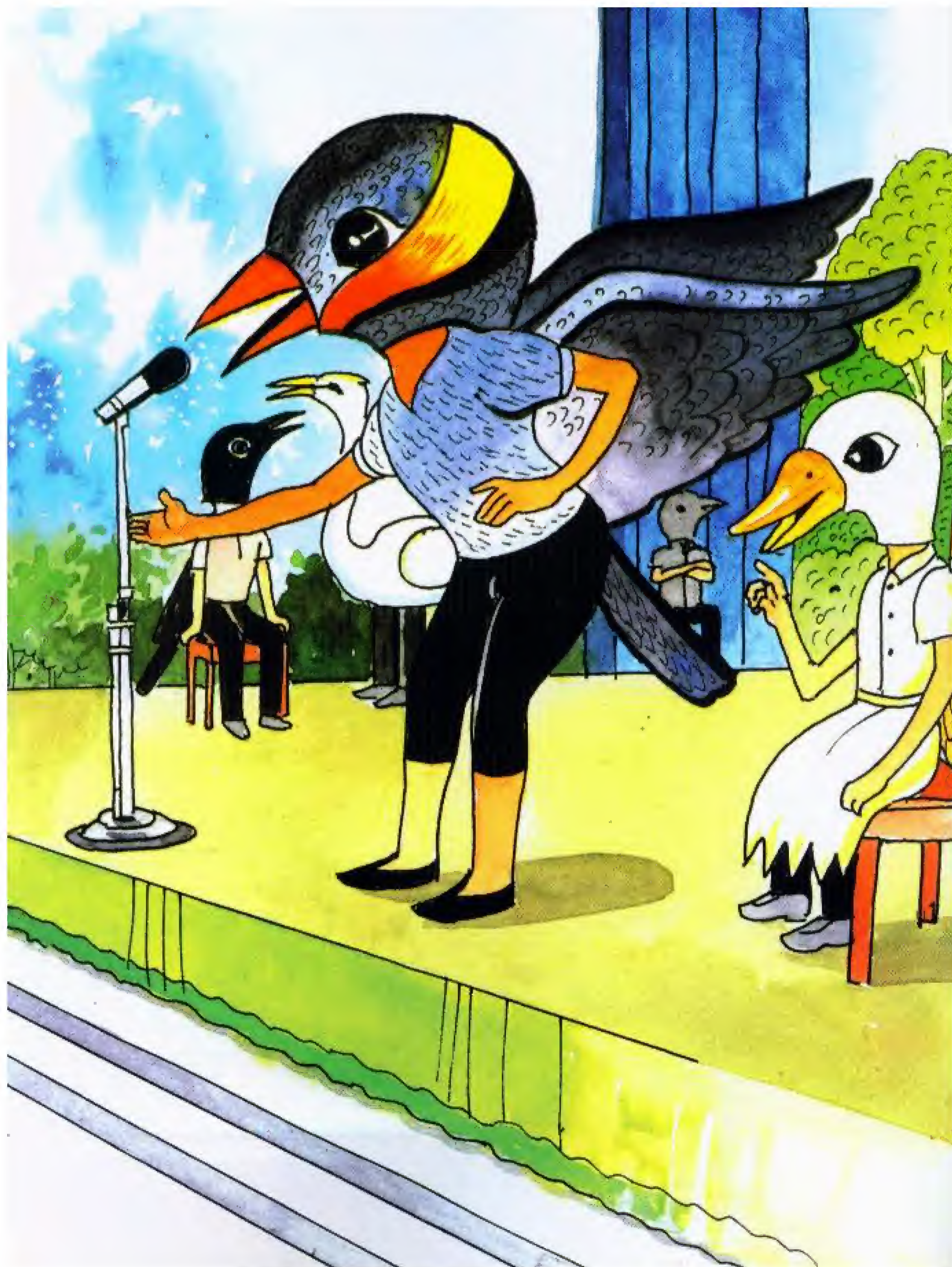
पपीहा—मेरी कविता का शीर्षक है, पिया-पिया की बोली सुनो रे!

पिया-पिया की बोली सुनो रे!
दूर वनों में रहनेवाला, अपने मन की कहनेवाला
आज बुलाता हूं प्रीतम को, तुम भी अपना शीश धुनो रे!
पिया-पिया की बोली सुनो रे!
मैं युग-युग से टेर रहा हूं, उसका पथ मैं हेर रहा हूं,
तुम भी गाओ उसकी गाथा, उसके गुन को आज सुनो रे!
पिया-पिया की बोली सुनो रे!

(तालियां—वाह! पपीहालालजी! वाह!! क्या टीस है आपकी वाणी में! कितनी सुंदर कविता है आपकी! क्या प्रीतम कहकर परमात्मा को याद किया है!)

हंसराज—अब श्री कागराज जी अपनी कांव-कांव की कविता सुनाएंगे। श्री कागराज जी महाराज!

कागराज— कांव कांव कांव कांव!
मुझे न ढेला मारो भाई!
मुझे न ढेला मारो भाई! मुझे न ढेला मारो!
कांव कांव कांव कांव!
एक आंख से तुमको देखूं, मैं हूं बड़ा सयाना
ज्योंही हाथ उठे ऊपर को, मुझको है उड़ जाना
बात क्यों ऐसी व्यर्थ विचारो, मुझे न ढेला मारो
मुझे न ढेला मारो भाई! मुझे न ढेला मारो!
कांव कांव कांव कांव!
काला हूं तो क्या है तुमको, मैं ही खबरें लाता
आनेवाले मेहमानों की पहले ही कह जाता



मत कौआ तुम मुझे उचारो, मुझे ढेला मत मारो
मुझे ढेला मत मारो भाई! मुझे ढेला मत मारो!
कांव कांव कांव कांव!
मैंने कभी कृष्ण के हाथों से, था माखन छीना
तुम क्या जानो तब से मुझको, कितना प्रिय है जीना,
तुम मुझ पर तन-मन वारो, पर मुझे ढेला मत मारो!
मुझे ढेला मत मारो भाई! मुझे ढेला मत मारो!
कांव कांव कांव कांव!

(तालियां बजना, हंसी, कांव कांव कांव की आवृत्ति!)

हंसराज– अब हमारे कवि सम्मेलन को सर्वश्रेष्ठ जानी-मानी कवयित्री अमराईवासिनी श्रीमती कोकिल कुमारी कविता सुनाएंगी। श्रीमती कोकिल कुमारी!

कोकिल– मैं हूं काली कोयल मैया!
तुमने देखी होगी सेना, खेतों पर फड़काते डैना
कबूतरों को अपने-आप, गुटरूं गूं का करते जाप
देखी भी होगी गोरैया, मैं तो काली कोयल मैया!
चमकदार डैने फैलाकर, नाचा करते हैं इतराकर
जब बादल गरजे घनघोर, वन में देखे होंगे मोर
लेते होंगे लाख बलैयां, मैं तो हूं पर कोयल मैया!
बगुला, हंस और क्या जाने, कितने-कितने चतुर सयाने
पक्षी देखे होंगे सारे, सुंदर-सुंदर प्यारे-प्यारे
मुझ में नहीं रूप है दैया, मैं हूं काली कोयल मैया!
मेरा घर आमों की डाली, मैं हूं काले पंखोंवाली
पर जब मीठा गाना गाती, सारे जग का हृदय चुराती
ऐसी-वैसी नहीं चिरैया, मैं हूं प्यारी कोयल मैया!

(तालियों की आवाज़– बहुत सुंदर! बहुत सुंदर!! एक कविता और होगी। श्रीमती कोकिल कुमारी की एक कविता और होनी चाहिए!)

हंसराज–आप लोग शांत रहें। मैं कोकिल कुमारी से प्रार्थना करता हूं कि वे अपनी एक कविता और सुनावें।



कोकिल—दूसरी कविता है—मैं कुहू-कुहू की टेर लगाती आई!
मैं कुहू-कुहू की टेर लगाती आई, मैं वाणी से अमृत बरसाती आई,
तुम आज उछलकर नाचो-कूदो गाओ, घर-घर मंगल साज सजाओ,
मैं एक संदेशा ऐसा लाई, मैं कुहू-कुहू की टेर लगाती आई!

मैं तो बसंत के स्वागत ही को गाती
उसके आने की तुमको खबर सुनाती
तुम सुन लो उसको मेरे प्यारे भाई!
मैं कुहू-कुहू की टेर लगाती आई!

आम गए बौराए केतकी फूली
पीली-पीली सरसों खेतों में फूली
सब ओर हास की एक लहर लहराई!
मैं कुहू-कुहू की टेर लगाती आई!

तुम हंसो हंसाओ, आओ बच्चो! आओ
हंस-हंसकर अपने गीत मनोरम गाओ
है आज बसंती छटा चहुं दिशि छाई!
मैं कुहू-कुहू की टेर सुनाती आई!

(तालियों की आवाज़—बहुत सुंदर रचना है!)

हंसराज—आज के कवि सम्मेलन में अपने-अपने स्वभाव के अनुसार सभी कवियों और कवयित्रियों ने अपनी-अपनी रचनाएं सुनाईं। श्री कुकुटचंद्र जी ने प्रभात में अपनी वाणी द्वारा जागरण का संदेश दिया। कुमारी मैना और श्रीमती बुलबुल बनर्जी ने अपने स्वभाव के अनुसार जीवन में मस्ती को भरा। जहां श्री पपीहालाल जी की कविता भक्तिभाव से भरी हुई थी, वहां श्री कागराज जी अपने यथार्थ रूप में आकर उपस्थित हुए। कवि सम्मेलन की प्राण श्रीमती कोकिल कुमारी का तो कहना ही क्या! सादगी और मिठास तो आपकी कविता का सदैव का गुण है। आज के कवि सम्मेलन की सफलता के लिए मैं आप लोगों को धन्यवाद देकर कवि सम्मेलन समाप्त घोषित करता हूं।





खेल खेल में

(दृश्य 1)

'परदा उठता है'

(कुछ लड़के हाथ में डंडे लेकर बजाते, गाते और खेलते हुए आते हैं)

सब लड़के	:	आओ, खेल खेलेंगे। अच्छा खेल खेलेंगे। आओ, खेल खेलेंगे।
एक लड़का	:	आओ, खेलें ऐसा खेल।
दूसरा लड़का	:	जिससे बढ़े सभी में मेल।
तीसरा लड़का	:	खेल-खेल में मेल बढ़े, वह खेल खेलेंगे॥
सब लड़के	:	आओ, खेल खेलेंगे। अच्छा खेल खेलेंगे। आओ, खेल खेलेंगे॥
चौथा लड़का	:	आओ, अपना देश बसाएं।
पांचवां लड़का	:	जिसमें बसकर हम सुख पाएं।
छठा लड़का	:	सबको सुखी बनाकर ही तो, हम सुख ले लेंगे॥
सब लड़के	:	आओ, खेल खेलेंगे। अच्छा खेल खेलेंगे। आओ, खेल खेलेंगे॥
सातवां लड़का	:	अपना एक चुनेंगे नेता।
आठवां लड़का	:	उसको जो सबको सुख देता।



नवां लड़का : उस नेता की बात मानकर सुख-दुःख झेलेंगे ॥

सब लड़के : आओ, खेल खेलेंगे।
अच्छा खेल खेलेंगे।
आओ, खेल खेलेंगे ॥

दसवां लड़का : नेता होगा अपना प्यारा।

ग्यारवां लड़का : होगा दुनियां भर से न्यारा।

बारहवां लड़का : पाकर प्यारा नेता सुख से डंड पेलेंगे ॥

सब लड़के : आओ खेल खेलेंगे।
अच्छा खेल खेलेंगे।
आओ खेल खेलेंगे ॥

तेरहवां लड़का : (उंगली से इशारा करते हुए) देखो, वह आता है नेता।

चौदहवां लड़का : सबकी आंखों को सुख देता।

पंद्रहवां लड़का : भाई! नेता की जय बोलो, दुश्मन पीछे ठेलेंगे ॥

सब लड़के : आओ खेल खेलेंगे।
अच्छा खेल खेलेंगे।
आओ खेल खेलेंगे ॥
(नेता आता है। सब लड़के गाना बंद करके एक लाइन में खड़े हो जाते हैं और नेता जी की जय बोलते हैं)

सब लड़के : हमारे नेता की जय हो।

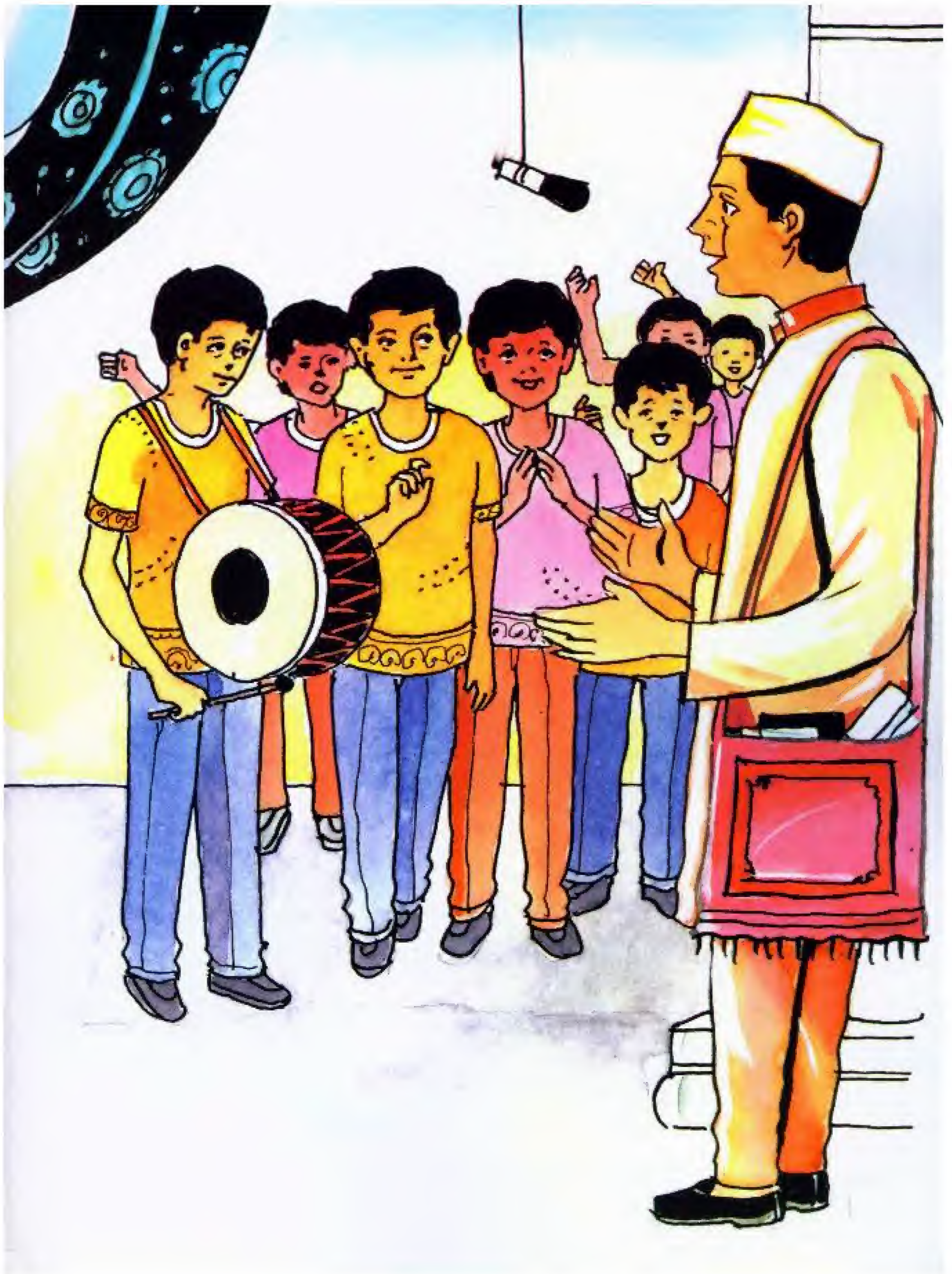
नेता : मेरे साथियो! तुम लोगों ने मुझे अपना नेता चुनकर मेरे ऊपर कर्त्तव्य का बोझा बढ़ा दिया है।

सब लड़के : हम यह जानते हैं और यह जानकर ही हमने आपको अपना नेता चुना है।

नेता : अच्छा तो आप लोगों ने प्रेम से मुझे जो यह बोझा सौंपा है, उसे मैं स्वीकार करता हूं, मगर एक बात है

सब लड़के : वह क्या?

नेता : वह यही है कि आपने एक राय होकर मुझे अपना नेता चुना है, तो आपको मेरी हर बात माननी पड़ेगी। अगर आप लोगों में से कोई भी मेरी बात नहीं मानेगा, तो मैं उसे दंड दूंगा।



सब लड़के : हमको यह स्वीकार है।

नेता : अच्छा तो आज से अपना यह देश बन गया। हम सब लोग इस देश के नागरिक हैं। हम सब एक-दूसरे के भाई हैं। एक-दूसरे को सुख पहुंचाना हमारा कर्त्तव्य है। हम में से कोई भी कभी भी झूठ नहीं बोलेगा, किसी की कोई चीज़ बिना पूछे नहीं लेगा और अगर कोई बाहरवाला हमारे देश की सीमा में आएगा तो हम सब मिलकर उसका मुकाबला करेंगे।

सब लड़के : बिल्कुल ठीक हमको यह मंजूर है।

नेता : और अगर आप में से कोई भी इसके खिलाफ़ काम करेगा, तो मैं उसे जो चाहे वह दंड दूंगा। बोलो, स्वीकार है मेरी यह शर्त? तभी मैं आपका नेता बनना स्वीकार करता हूं, वरना नहीं।

सब लड़के : हमें आपकी हर शर्त मंजूर है। हमने आपको खूब सोच-समझकर नेता चुना है।

नेता : तो आओ साथियो! देश की उन्नति के लिए हम सब मिलकर प्रयत्न करें। (एक लड़के की ओर इशारा करके) देखो, तुम अपने देश की उत्तरी सीमा की रखवाली करो, (दूसरे लड़के की ओर इशारा करके) तुम पूर्वी सीमा की; (तीसरे लड़के की ओर इशारा करके) तुम दक्षिणी सीमा की (चौथे लड़के की ओर इशारा करके) और तुम पश्चिमी सीमा की। और बाकी के सब लोग देश के भीतर खूब अनाज पैदा करो, खूब कपड़े बुनो और देश की सब तरह से उन्नति करो।

सब लड़के : बहुत अच्छा! बहुत अच्छा!!

(सब लड़के जाते हैं। लड़कों के बाद पीछे से नेता भी जाता है)

'परदा गिरता है'

(दृश्य 2)

(नेता राजदंड लेकर सिंहासन पर बैठा है। एक लड़के का प्रवेश)

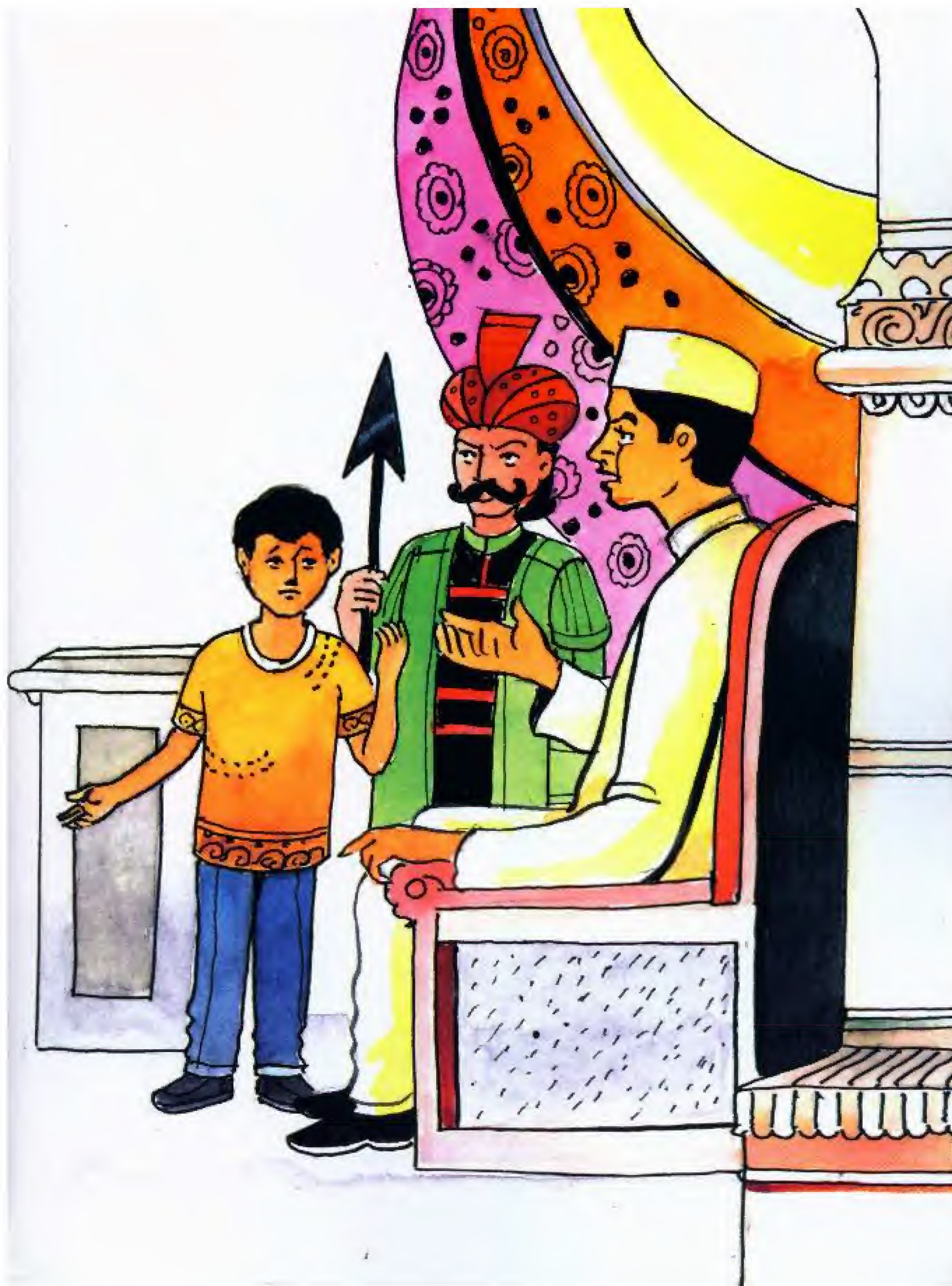
लड़का : नेताजी! मुझे दंड दीजिए।

नेता : किस बात के लिए भाई?

लड़का : मैंने पड़ौसी के बाग से उसकी बिना इजाज़त के फल तोड़कर खाए हैं।

नेता : तो फिर जाओ, जिसके बाग से तुमने फल चुराकर खाए हैं, उससे माफ़ी मांगो।

लड़का : उसी ने मुझे आपके पास दंड पाने के लिए भेजा है। नेताजी! मैं आपको सारी



कहानी सुना दूं?

नेता : हां! सारी बात बताओ, तभी तो कुछ समझ में आवे।

लड़का : नेताजी! मुझे बड़ी भूख लग रही थी, तो मैं अपने पड़ौसी के बाग में चला गया। पड़ौसी वहां नहीं था। मुझे भूख बहुत ज़ोर की लगी थी। यह सोचकर कि हम सब तो भाई-भाई हैं, मैंने उसके बाग से फल तोड़कर खाना शुरू कर दिया।

नेता : फिर!

लड़का : इतने ही में पड़ौसी आ गया। उसने जब मुझे फल खाते हुए देखा, तो पूछा, "फल कहां से लाए?" मैंने सब सच बता दिया। कहा कि तुम्हारे बाग से। बस पड़ौसी नाराज़ हो गया और कहा कि जाओ, चोरी के अपराध के लिये नेता से दंड मांगो।

नेता : तो तुमने उससे माफ़ी नहीं मांगी।

लड़का : मैंने उससे कहा कि नेता के पास क्यों भेजते हो? चोरी तो मैंने तुम्हारी की है। तुम्हीं दंड दे दो, परंतु उसने कहा कि दंड देने और क्षमा करने का अधिकार नेता ही को है, हमको नहीं। तुमने चोरी करके मेरे अकेले का नहीं सारे समाज का अपराध किया है। इसलिये तुम्हें नेता ही दंड दे सकता है, मैं नहीं। मैं तुम्हें दंड देकर या क्षमा करके दूसरे सामाजिक अपराध का भागी नहीं होना चाहता।

नेता : अच्छा यह बात है तो भाई! सुनो। मेरे न्याय के अनुसार चोरी करनेवाले का दंड, "उसके हाथ काट लेना है।"

लड़का : ठीक है! मुझे स्वीकार है आपका यह निर्णय। आप मेरे हाथ काट लीजिये।

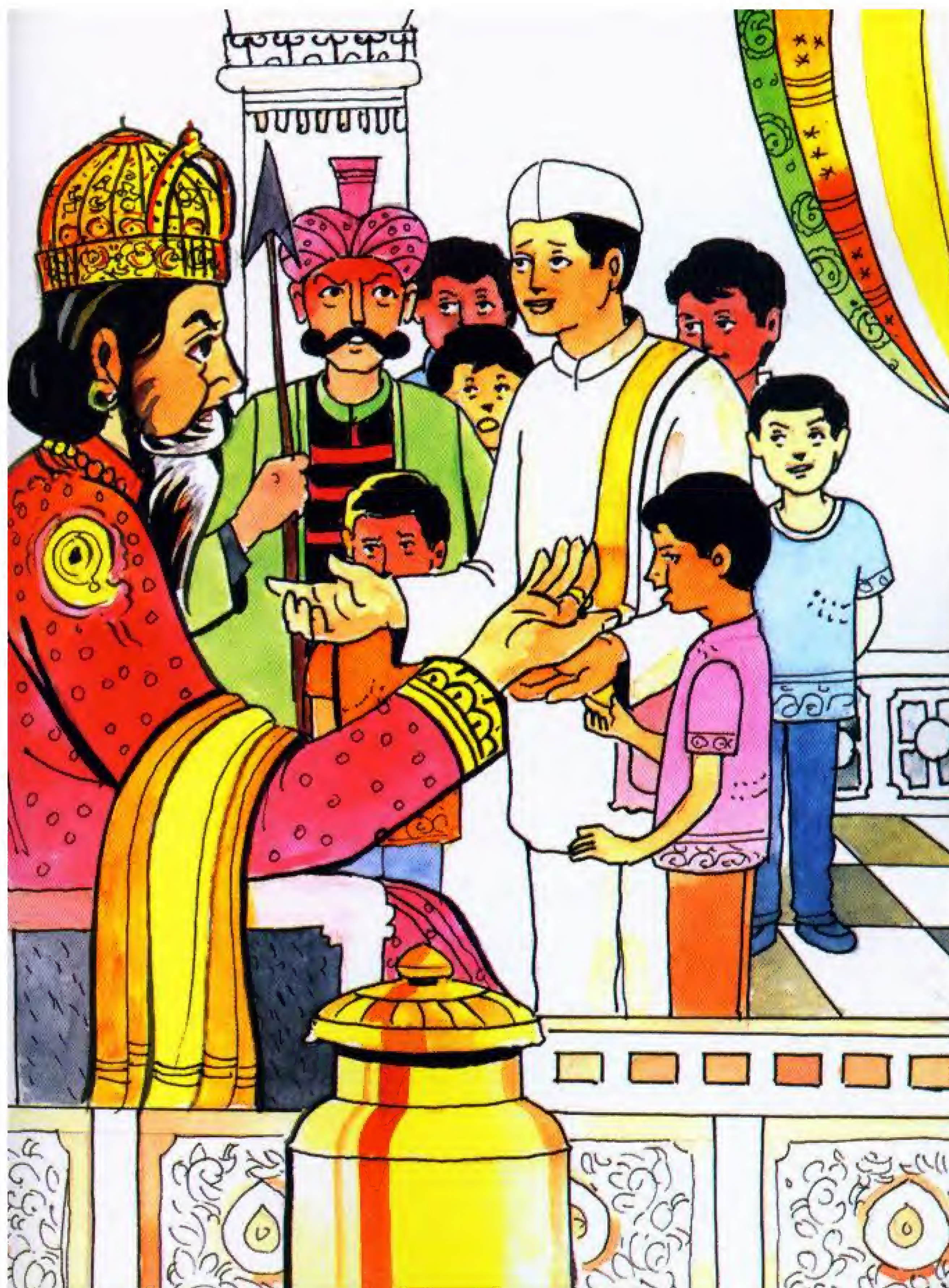
नेता : तो सिपाही ले जाओ। इसके दोनों हाथ कटवा दो।

सिपाही : जो आज्ञा! (सिपाही लड़के को लेकर चलता है। दूसरी ओर से राजा आता है)

राजा : ठहरो सिपाही! (नेता की ओर देखकर) मैंने अभी सुना कि तुमने इस लड़के के हाथ काटने के लिए कहा है?

लड़का : (राजा से) हां! आप मुझसे पूछिए! मैं आपको बताता हूं। ये हमारे नेता हैं। हमारा न्याय करते हैं। मैंने चोरी की थी। इसके अपराध में इन्होंने मुझे दंड दिया है।

राजा : दंड! कैसा दंड? कौन है दंड देनेवाला? मैं इस देश का राजा हूं और कोई यहां दंड कैसे दे सकता है?



(कुछ लड़कों का प्रवेश)

लड़के : महाराज! हम लोगों ने अपना एक देश बसाया है, जिसका इन्हें (नेता की तरफ़ इशारा करके) नेता चुना है।

राजा : मैं यह सब क्या सुन रहा हूं? मेरे देश के भीतर तुम लोगों ने एक दूसरा देश बसाया है?

नेता : (आगे बढ़कर विनम्रता से) हां महाराज! हम लोग खेल खेल रहे हैं। जैसे आपका इतना बड़ा देश है, वैसे ही हमने भी खेल में अपना छोटा-सा देश बनाया है। जैसे आप राजा हैं, वैसे ही इन सब लोगों ने मुझे अपना नेता चुना है। जैसे सारी प्रजा आपकी आज्ञा मानती है, वैसे ही ये सब मेरा कहना मानते है। फ़र्क केवल इतना है कि आपकी आज्ञा डर से मानी जाती है और मेरा कहना प्यार से। आप बने-बनाए राजा हैं और मुझे इन्होंने अपना राजा चुन लिया है।

एक लड़का : और चुना हुआ राजा बने-बनाए राजा से अच्छा होता है, महाराज!

राजा : वह किस तरह?

नेता : वह इस तरह कि अगर मैं ठीक-ठीक न्याय न करूं, तो ये मुझे नेतागीरी से हटा सकते हैं।

सब लड़के : (बात बीच ही में काटकर) मगर महाराज! हमें इनको हटाने की कोई ज़रूरत ही नहीं है, क्योंकि ये बहुत ही अच्छा न्याय करते हैं। ये न्याय करते समय किसी से भी नहीं डरते।

राजा : (भोहों को तानकर) किसी से भी नहीं डरते? राजा से भी नहीं डरते? यही बात है न!

नेता : हां, मैं न्याय करते समय राजा से भी नहीं डरता, क्योंकि मैं सच्चा न्याय करता हूं।

राजा : (क्रोध से) अच्छा तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि राजा से न डरने का क्या परिणाम होता है। सेनापति (सेनापति का प्रवेश) इस बालक को पकड़ लो। यह मेरे राज्य में अराजकता का खेल खेलता है और कल इसे मेरे सामने पेश करो।

सेनापति : जो आज्ञा महाराज! (सेनापति नेता को गिरफ़्तार करता है)

एक लड़का : हम अपने नेता को नहीं पकड़ने देंगे। हम सब लड़ेंगे। (कोलाहल)

नेता : नहीं भाइयो! लड़ने की ज़रूरत नहीं है। ये सेना के बल पर मुझे डराना चाहते हैं,

परंतु मैं डरनेवाला नहीं हूं। ये मुझे पकड़कर क्या करेंगे? ये जहां भी मुझे ले जाएंगे, वहीं मैं सच बोलूंगा। जो सच बोलता है, वह किसी से नहीं डरता। तुम लोग भी सत्य और अहिंसा ही का पालन करो। अगर मुझे छुड़ाना चाहते हो, तो अपने-अपने घर जाओ और जाकर सत्याग्रह करो। गांधीजी ने सत्याग्रह के बल पर ही भारत को आज़ादी दिलाई थी।

सब लड़के : बिल्कुल ठीक! बिल्कुल ठीक!! हम सत्याग्रह करेंगे। राजा के विरुद्ध आवाज़ उठाएंगे। या तो हमारे नेता को छोड़ दीजिए, नहीं तो हमको भी गिरफ़्तार कर लीजिए। (कोलाहल)

'परदा गिरता है'

(दृश्य ३)

(राजदरबार। राजा बीच में बैठा है। इधर-उधर मंत्रीगण बैठे हैं)

राजा : (मंत्री की ओर मुंह करके) मंत्री जी! ज़रा से लड़के ने तो मेरी नींद हराम कर दी। कल से जबसे वह लड़का पकड़ा गया है, प्रजा में विद्रोह हो गया है। सब लोग सत्याग्रह की धमकी देने लग गए हैं। क्या किया जाए?

मंत्री : हां महाराज! ज़रा-ज़रा से बालक ही नहीं उनके माता-पिता भी सत्याग्रह करने पर उतारू हैं और यदि सारी प्रजा को सेना के बल पर कुचल दिया जाए, तो फिर शासन किस पर किया जाएगा?

राजा : यही तो मैं भी सोच रहा हूं। इस हठी बालक को गिरफ़्तार करके मैंने आफ़त ही मोल ले ली। खैर देखा जाएगा। पहरेदार! बुलाओ सेनापति को ।

(सेनापति का प्रवेश)

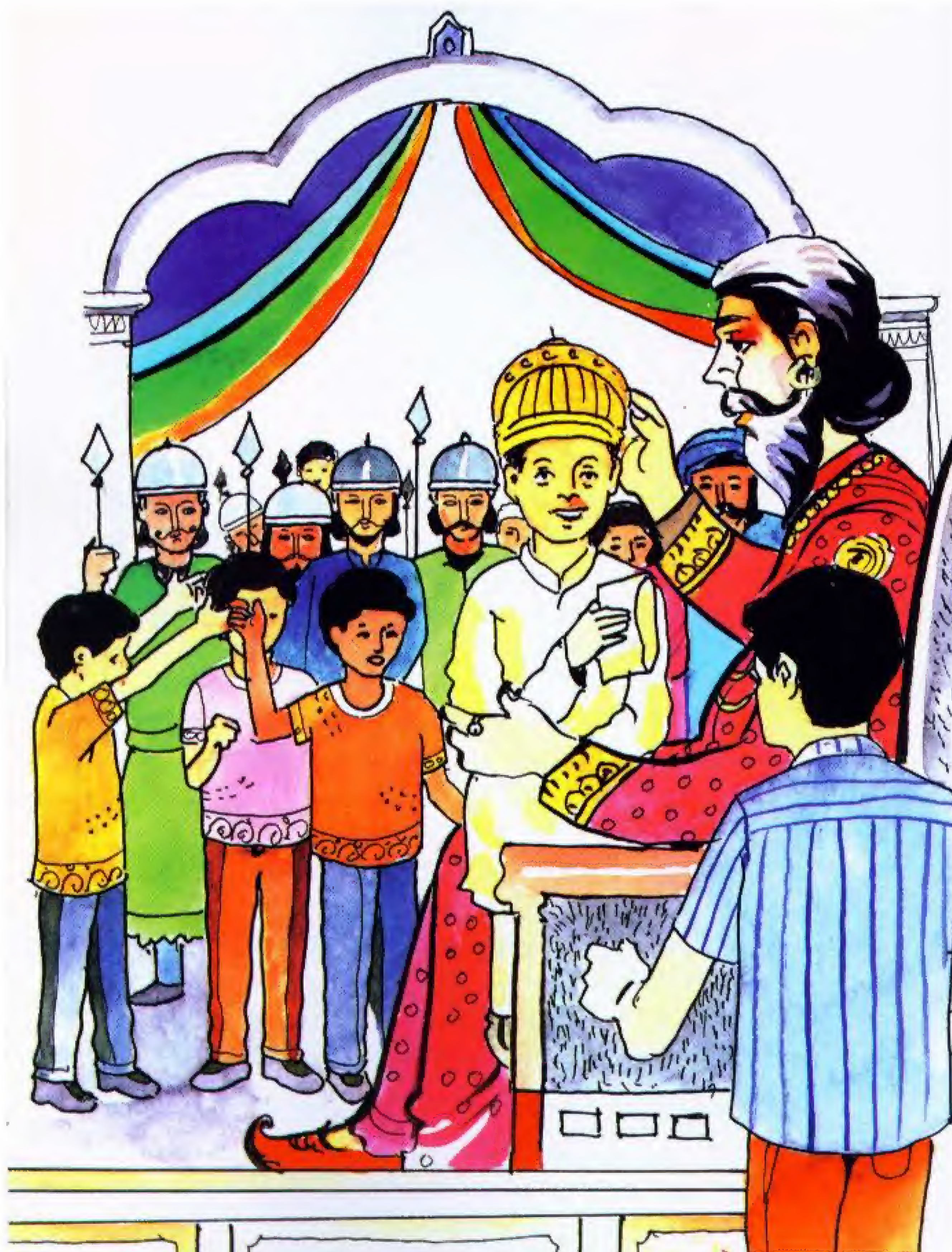
सेनापति : (झुककर अभिवादन करता है) क्या आज्ञा है महाराज?

राजा : (कुछ सोचता हुआ) आज्ञा? हां, आज्ञा कुछ नहीं। हां, उस लड़के का क्या हाल है।

सेनापति : महाराज! वह तो बिलकुल निडर है। मैंने उसे बहुत धमकाया, मगर वह तो मानो किसी से डरता ही नहीं है।

राजा : अच्छा, तो उसे हाज़िर करो।

सेनापति : बहुत अच्छा महाराज! (सेनापति जाता है और तुरंत ही हथकड़ी लगे हुए लड़के को लाता है)



राजा : तो लड़के! तुम अब भी राजा से नहीं डरते?

नेता : नहीं!

राजा : सेनापति! ले जाओ इसे और इसे फांसी पर चढ़ा दो।

सेनापति : जो आज्ञा।

(सेनापति लड़के को लेकर चलता है। लड़का भी सीना तानकर चलता है। राजा फिर लड़के को कहता है।)

राजा : लड़के अब भी सोच लो।

लड़का : इसमें सोचना क्या है? मैंने कभी झूठ नहीं बोला, कभी किसी के साथ अन्याय नहीं किया। इसीलिए मैं कभी किसी से भी नहीं डरता। मेरी मां कहा करती थी कि जो झूठ नहीं बोलते, किसी के साथ अन्याय नहीं करते, वे किसी से नहीं डरते।

(इसी बीच रियाया का दरबार में प्रवेश। कोलाहल)

रियाया : हम इस बालक को फांसी नहीं लगाने देंगे। अगर इसे फांसी लगानी है, तो हमें भी फांसी लगाइए।

(रियाया लड़के को जाकर पकड़ लेती है। सेनापति लोगों को पीछे धकेलता है। वे आगे बढ़ते हैं।)

राजा : सेनापति! रुको। बालक को छोड़ दो।

(सेनापति को अचंभा होता है और बालक की हथकड़ी खोल देता है।)

रियाया : भाग चलो यहां से नेता! भाग चलो।

नेता : नहीं! मुझे किसका डर, जो मैं यहां से भागूं।

राजा : भाग क्यों नहीं जाते बालक?

नेता : क्योंकि आप मेरे राजा हैं और आप मुझे दंड देना चाहते हैं। एक प्रजा के नाते मेरा कर्त्तव्य है कि आप जो भी दंड दें, चाहे वह उचित हो, चाहे अनुचित उसे मैं स्वीकार करूं। आप अपना कर्त्तव्य करें और मैं अपना।

राजा : अच्छा, तो यहां आओ मेरे पास।

(बालक निर्भीक भाव से राजा के पास जाता है। राजा बालक को गोद में उठा लेता है और अपने सिर से मुकुट उठाकर बालक के सिर पर रखता है।)

मेरा कर्त्तव्य तो यह है, (सब लोगों को संबोधित करके कहता है) मेरी प्यारी प्रजा और मेरे मंत्रियो! आप सब लोगों को मालूम है कि मेरे कोई संतान नहीं और इस बालक में मैं वे सब गुण देखता हूं, जो एक राजा के लिए ज़रूरी हैं। इसके साथियों ने खेल-खेल में इसे अपना नेता चुना और मैं उसी खेल को आगे बढ़ाकर सचमुच में इसे युवराज घोषित करता हूं। मेरे बाद यह आपका राजा होगा। आपका सच्चा नेता!

(सब लोग प्रसन्नता से तालियां बजाते हैं)

रियाया : हमारे राजा की जय! हमारे नेता की जय!

(बालक गाते हुए आते हैं। जनता की ओर देखकर)

बोलो देखा तुमने खेल
कितना अच्छा है ये खेल
जिससे बढ़ा सभी में मेल
हमने खेला ऐसा खेल।
नेता की तरफ़ इशारा करके—
देखो वहां खड़ा है नेता
सबकी आंखों को सुख देता
भाई! नेता को जय बोलो, बढ़ता खेल-खेल में मेल
हमने खेला ऐसा खेल।

'परदा गिरता है'





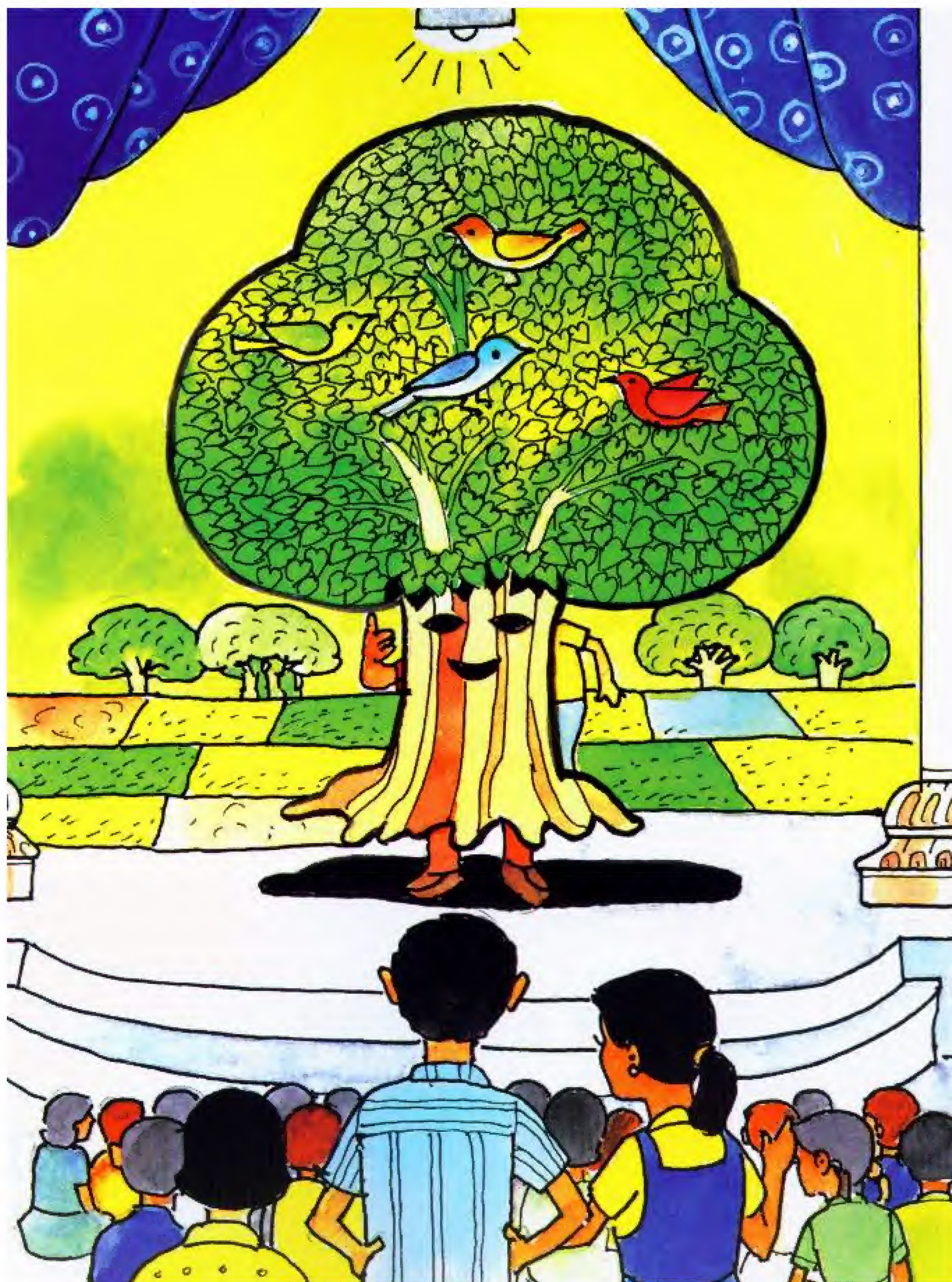
पेड़ सम्मेलन

सूत्रधार : जिस प्रकार आदिकवि महर्षि बाल्मीकि ने तपोवन की शोभा को बढ़ाया था; जिस प्रकार कविकुल चूड़ामणि कालिदास आदि कवियों ने सम्राट विक्रमादित्य की सभा को गौरव प्रदान किया था; जिस प्रकार तानसेन, रहीम, फैजू आदि के कारण शहंशाह अकबर के दरबार में रौनक आ जाती थी, उसी प्रकार आज इस पेड़ सम्मेलन में सम्मिलित होकर भारत के पंच पेड़—पीपल, बरगद, नीम, बबूल और आम हमारे मंच को सुशोभित कर रहे हैं। वे बारी-बारी से अपने विषय में आपको कुछ सुनाएंगे।
सबसे पहिले सुनिए श्री पीपल को। आइए श्री पीपल जी!

पीपल : मैं पीपल का पेड़ पुराना
इस ज़मीन में दूर-दूर तक, मेरी जड़ें जमी हैं नाना
मैं पीपल का पेड़ पुराना
* * *

हाथी मेरी डाली खाता
चिड़िया को मेरा फल भाता (पृष्ठभूमि में चिड़ियों की चहचहाहट)
तले विरमता थका बटोही, जिसका कहीं न ठोर ठिकाना
मैं पीपल का पेड़ पुराना
* * *

मैंने कितना सहा कसाला
कितना झेला आतप पाला
मैं बुड्ढा हो गया, सहा मैंने कितना सुख-दुःख मनमाना
मैं पीपल का पेड़ पुराना
* * *



मेरे तले समाधि लगाई
तभी बुद्ध ने विभुता पाई
इससे पहिले भी तो मेरी, पूजा करता रहा ज़माना
मैं पीपल का पेड़ पुराना
*　　*　　*

तनिक हवा में डोलें पत्ते
(पृष्ठभूमि में पत्तों की हरहराहट और हवा चलने का स्वर)
हर-हर, हर-हर बोलें पत्ते
मुझसे क्यों डरते हो बच्चो, मैं गाता मरघट में गाना
मैं पीपल का पेड़ पुराना
इस ज़मीन में दूर-दूर तक, मेरी जड़ें जमी हैं नाना
मैं पीपल का पेड़ पुराना

(तालियों की गड़गड़ाहट, 'वाह-वाह' का शोर)

सूत्रधार : अभी आप भारत के पुराने पेड़ पीपल से कुछ सुन रहे थे। जैसा कि पीपल जी ने स्वयं बताया, भारतवर्ष की संस्कृति में दूर-दूर तक बहुत गहरी उनकी जड़ें फैली हुई हैं और भारत के करोड़ों नर-नारी प्रतिदिन उन पर जल चढ़ाते और उनकी पूजा करते रहते हैं। हिंदू और बौद्ध दोनों ही को समान रूप से वे मान्य हैं।
अब पीपल के भाई बरगद को सुनिए। आइए श्री बरगद जी!

बरगद : पीपल का मैं भाई हूं, है बरगद मेरा नाम
आओ, मेरे प्यारे बच्चो! मुझको करो प्रणाम
*　　*　　*

मैं भारत का मूल निवासी कभी नहीं डरता हूं
बड़ी-बड़ी दीवारों को मैं तोड़ उगा करता हूं
फूटा करतीं शाखाओं से भी तो जड़ें तमाम
पीपल का मैं भाई हूं, है बरगद मेरा नाम
आओ, मेरे प्यारे बच्चो! मुझको करो प्रणाम
*　　*　　*



खेला करते मुझ पर चढ़कर, बच्चे ओलक डंडा

(पृष्ठभूमि में बच्चों के खेलने का शोर)

मेरे नीचे जेठ मास में भी तो रहता ठंडा
औरों को ठंडक देता हूं, पर मैं सहता घाम
पीपल का मैं भाई हूं, है बरगद मेरा नाम
आओ, मेरे प्यारे बच्चो! मुझको करो प्रणाम

* * *

मेरी टहनी हाथी खाता, बल पाता भरपूर

(पृष्ठंभूमि में हाथी चिंघाड़ने और बंदरों के बोलने का शोर)

फल खाकर के बंदर मेरा कूदा करता दूर
मेरा फल अकाल में मानव के भी आता काम
पीपल का मैं भाई हूं, है बरगद मेरा नाम
आओ, मेरे प्यारे बच्चो! मुझको करो प्रणाम

* * *

मेरे पत्ते खाकर बकरी होती पुष्ट ज़रूर

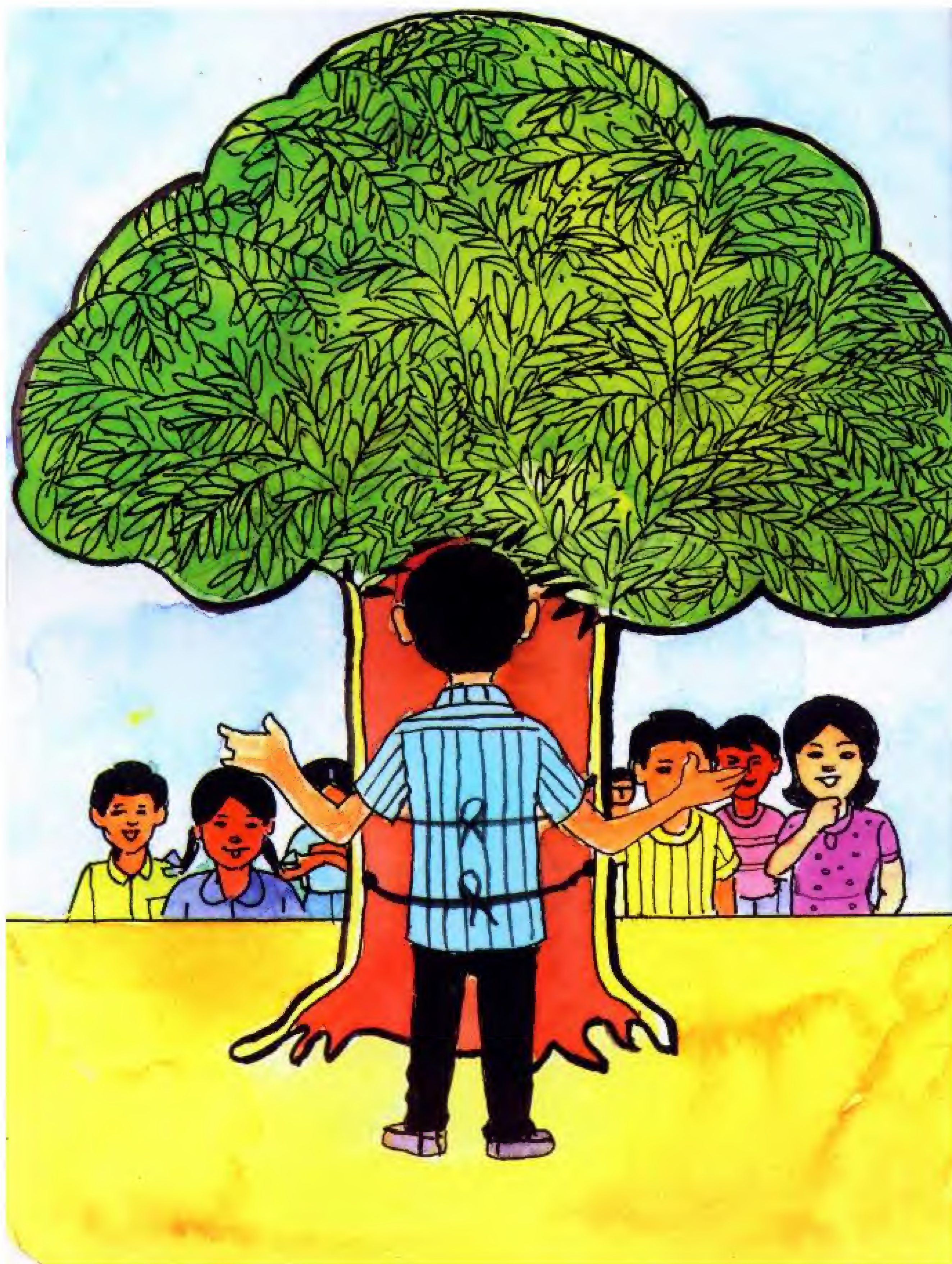
(पृष्ठभूमि में बकरी का मिमियाना)

मेरा दूध तुम्हें बल देगा, चख लो इसे हजूर
आता इतने काम तुम्हारे, बिन खरचे कुछ दाम
पीपल का मैं भाई हूं, है बरगद मेरा नाम
आओ, मेरे प्यारे बच्चो! मुझको करो प्रणाम

* * *

मेरा तना बहुत मोटा है, छोटा-सा है बीज
छोटे-से ही बड़ा बन गया, देखो, मैं नाचीज़
क्योंकि सभी की सेवा करता, रहता आठों याम
पीपल का मैं भाई हूं, है बरगद मेरा नाम
आओ मेरे प्यारे बच्चो! मुझको करो प्रणाम

(तालियों की गड़गड़ाहट, 'वाह-वाह' का शोर)



सूत्रधार : तो ये थे, पीपल के भाई बरगद! इनकी टहनियों से निकल-निकलकर जड़ें जटाओं की तरह ज़मीन की ओर लटक रही हैं, मानो किसी तप में लीन ऋषि की दाढ़ी हो। देखते ही मन में श्रद्धा हो जाती है। कभी-कभी ये जड़ें डालियों से लटककर ज़मीन में प्रवेश कर जाती हैं और इस प्रकार एक ही बरगद के कई तने बन जाते हैं। ऐसे हैं हमारे बरगद जी।

अच्छा तो अब आ रहे हैं आपके सामने भारत के तीसरे पेड़ श्री नीम! अनेक बीमारियों की औषधि नीम! आइये, श्री नीम जी!

नीम : सावन का महीना आया, पकी हैं निबोलियां

(पृष्ठभूमि में झूला झूलने, निंबोरियों के गिरने और पानी बरसने का स्वर)

झूल रही हैं मुझ पर, झूला डालकर हमजोलियां

*   *   *

चैत लगा तब कोंपल आई
कुछ दिन बाद डाल बौराई
शीतल छाया जेठ सुहाई
अब बरखा संग वास रही हैं, ये अमृत की गोलियां
सावन का महीना आया, पकी हैं निबोलियां

*   *   *

मैं कड़आ हूं, पर गुणकारी
मेरा सेवन करें नर-नारी
दूर भागती हैं बीमारी
लोगबाग पत्ते तक मेरे, ले जाते भर झोलियां
सावन का महीना आया, पकी हैं निबोलियां

लकड़ी मेरी बड़े काम की
कड़ियां बनती बहुत दाम की
और किवाड़ें बड़े नाम की
बात कह रहा हूं मैं सच्ची, करता नहीं ठिठोलियां
सावन का महीना आया, पकी हैं निबोलियां

इसीलिए मैं सबको भाया
वैद्यक ने मेरा गुण गाया
गांव-गांव में मेरी छाया
जिसके नीचे खेलें बच्चे, बोलें मीठी बोलियां
सावन का महीना आया, पकी हैं निबोलियां
*   *   *
झूल रही हैं मुझ पर, झूला डालकर हमजोलियां
खेल रहे हैं बच्चे नीचे, बोलें मीठी बोलियां।

(पृष्ठभूमि में बच्चों के खेलने, झूला झूलने और गीत गाने का स्वर)
(तालियों का शोर)

सूत्रधार : तो सुना आपने श्री नीम को! भारत के कोटि-कोटि गांवों में अपनी शीतल छाया फैलाने वाले कड़वे, परंतु अत्यंत गुणकारी और लाभदायक नीम को। ऐसा है भारत का नीम!
अच्छा, तो अब भारत का बदनाम पेड़ बबूल आपके सामने आ रहा है...कंटीला बबूल! आइये, कंटकधारी श्री बबूल जी!

बबूल : मैं बबूल हूं
मैं बबूल हूं
मूल, तना, टहनी, पत्ते और शूल हूं
मैं बबूल हूं

मेरे गोल-पीले फूल शोभाशाली हैं
किंतु लोग कांटों हेतु देते गाली हैं
छोटी-छोटी पत्तियों में हरी भूल हूं
मैं बबूल हूं

रामकटी, कौड़िया और तैलिया है जाति
खेती के काम आता मैं हूं कई भांति
लकड़ी जलाते लोग बनता धूल हूं
मैं बबूल हूं

खाल को पकाते मेरी छाल से हैं लोग
कीकर की फलियां हैं, बकरी का भोग
गोंद मेरा गुणकारी, पक्की चूल हूं
मैं बबूल हूं

इतना हूं काम मैं आता, पर न मेरा मान
कांटों के कारण न रही मेरी शान
झाड़ हूं कंटीला, बाड़ का उसूल हूं
मैं बबूल हूं
छोटी पत्ती, पीले फूल और शूल हूं
मैं बबूल हूं

(तालियों का शोर)

सूत्रधार : कंटीला बबूल भी लाभदायक वृक्ष है। इसकी लकड़ी जलाने के काम आती है और इससे खेती के मज़बूत-मज़बूत औज़ार बनाए जाते हैं। कीकर की पकी हुई लकड़ी से गाड़ी के पहियें, हल की हरस और न जाने क्या-क्या बनते हैं। अगर दो पड़ोसियों में आपस में झगड़ा हो जाए, तो दोनों को अलग-अलग करने के लिए बबूल के कंटीले झांकरों की ही बाड़ लगाते हैं और कहते हैं, ''चलो भाई! रोज़-रोज़ की राड़ से तो बाड़ अच्छी।''

अब आज के पेड़ सम्मेलन के अंतिम पेड़ रसाल यानी आम आपके सामने उपस्थित होंगे। संस्कृत के कवियों से लेकर आज तक अनेक कवियों ने आम की प्रशंसा में छंद रचना की है। आज वे आपको अपने संबंध में स्वयं कुछ सुनाएंगे। आइए, वृक्षवर श्री आम जी!



आम : सभी कहते हैं मुझको आम
और मेरा रसाल है नाम

चैत में मै बौराता खूब
और तब कोयल गाता खूब

(पृष्ठभूमि में कोयल का स्वर)

गूंजता मधुवन तभी तमाम
सभी कहते हैं मुझको आम

बरसते जब बादल रस धार

(पृष्ठभूमि में बादल की गरजन और वर्षा)

तभी बगिया में बहुत बहार
पेड़ से पके टपकते आम
और मेरा रसाल है नाम

नाचते मोर मचाते शोर

(पृष्ठभूमि में मोर का शोर)

बनाते कवि को आत्मविभोर
हुई अमराई सुर का धाम
सभी मुझको कहते हैं आम

बीज से भी उगता है पेड़
कलम से भी लगता है पेड़
आम के झुरमुट हैं सरनाम
और मेरा रसाल है नाम

बनारस का लंगड़ा मशहूर
दशहरी खाना आप ज़रूर

सफेदा के क्या कहने दाम
सभी कहते हैं मुझको आम

माल्दा पटना का विख्यात
आम बंबैया सबको ज्ञात
गिनावें तुमको कितने नाम
सभी कहलाते हैं पर आम

और देशी आमों के ढेर
बिका करते पैसे के सेर
सभी का बनता है तब काम
बिका करते शहरों में आम

बस रहा जनजीवन में आम
आम से है भारत का नाम
नाम से मेरे बसते गाम
गाम से मेरे पड़ते नाम
सभी कहते हैं मुझको आम
और मेरा रसाल है नाम।
(तालियों का बजना)

सूत्रधार : तो ये थे, हमारे भारत के पांच पेड़, पीपल, बरगद, नीम, बबूल और आम जिनका सम्मेलन अभी आपने सुना। अब हमारे पेड़ सम्मेलन का कार्यक्रम समाप्त होता है। धन्यवाद!



एस.एस. इन्टरप्राइज़ेज, नई दिल्ली द्वारा शब्द संयोजन तथा पुष्पक प्रेस प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा मुद्रित



रु. 30.00 ISBN 978-81-237-5814-5

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

